आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 06/06/2023; Published: 24/06/2023

जंगल से लौटकर

- कुमार मनीष अरविंद

जंगल से हूँ फिर मैं लौटा।
चहक रहा हूँ पंछी जैसा !
खुशबू है प्रकृति की
मेरे मन में अबतक
पंख पसारे
तितली-जैसी रंग-बिरंगी

जब भी जंगल में जाता हूँ
थोड़ा जंगल ले आता हूँ
साथ बाँध कर
आँखों में
बिखरी हरीतिमा
कानों में लेता समेट
नालों का कलकल,
सिहरन ले आता समीर की
रोम-रोम में,
चट्टानों की दृढ़ता मन में
आ जाती है,
पर्वत से स्वयं ही आता
संकल्प बड़ा-सा-
ले आता हूँ जंगल थोड़ा !

तुम भी जंगल में हो आना
मन को अच्छे से धो आना।
फिर हम बातें एक-दूसरे की
समझेंगे
ठीक तरह से
शब्दों को मिल पाएगा
आयाम नया कुछ
संप्रेषण में.....
कविता से भर जाएगा
'संपर्क '!-
मगन हम नाच उठेंगे !
लौटोगे जब तुम जंगल से।

****